जीएसटीः सब कुछ इतना आसान भी नहीं

सेहतः जीन कहे सो खाएं / तस्करीः पेट में रखकर ला रहे सोना

इंडिया टुडे

60 रुपए 18 जून, 2025

अमेरिका में पढ़ाई

सपनों पर लगा पूर्णविराम

डोनाल्ड ट्रंप की लगाई पाबंदियों ने भारतीय छात्रों की उम्मीदों के दरवाजे किए बंद

RNI NO. 45823/1986 REGISTRATION NO. DL(DS)-02/MP/2025-26-27. DL(ND)-11/6042/2024-25-26; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2024-26; FARIDABAD/46/2023-25 www.indiatodayhindi.com

CamScanner

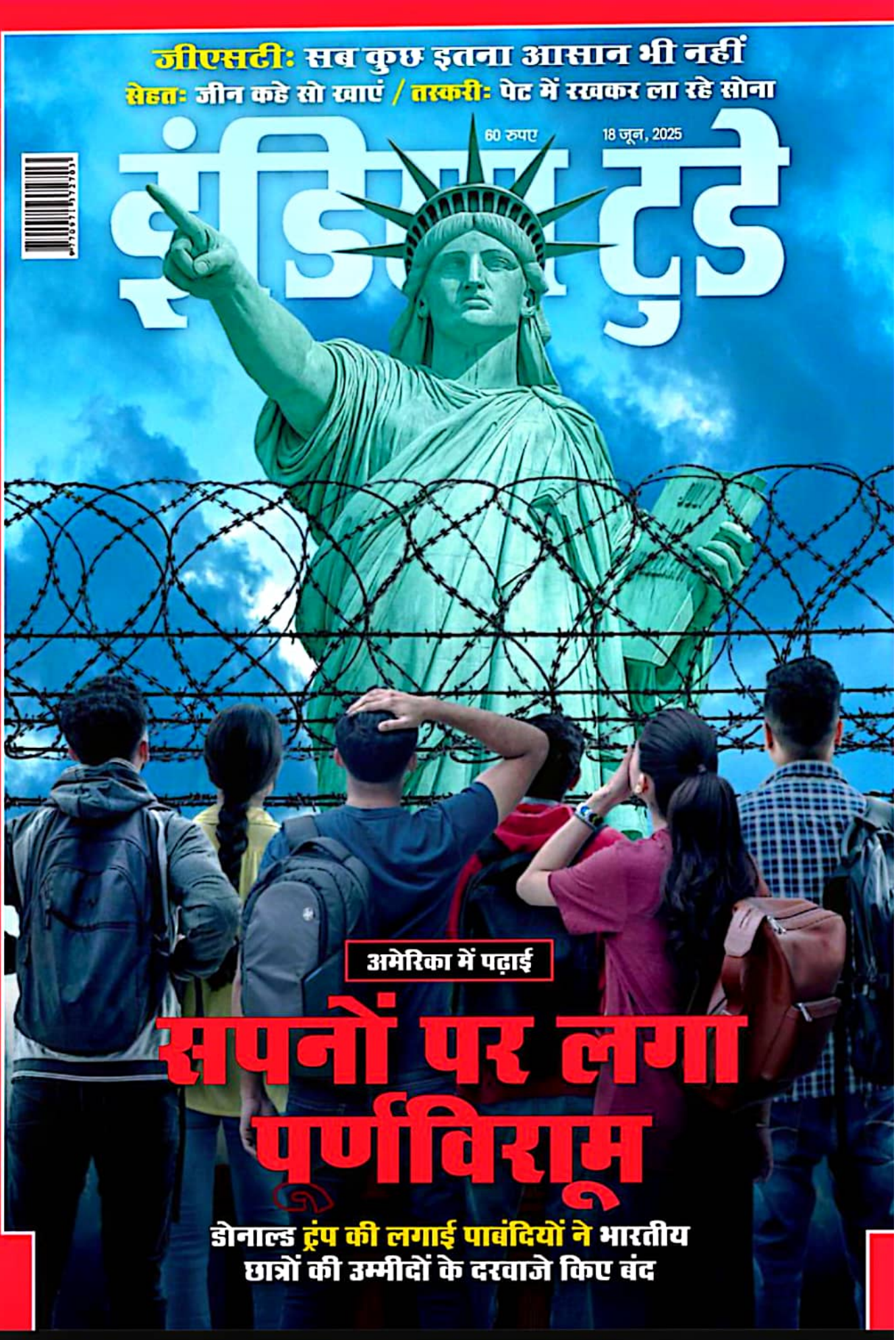

पटना की उड़ान बिहार की राजधानी में नया एअरपोर्ट टर्मिनल

पीटीआइ

उन्होंने भरपूर राजनैतिक गलबहियां भी कीं. फिर, जैसा कि जद (यू) के नेताओं ने दुख के साथ माना, उनके बिक्रमगंज के भाषण में देर तक राजद और कांग्रेस पर गोले भी बरसाए गए, यानी ऐसा नहीं था कि उन्होंने राजनीति से परहेज किया. तब तो यह साफ चूक थी.

यह 2025 में मोदी की तीसरी बिहार यात्रा थी. अक्तूबर-नवंबर में होने ...ाले चुनाव की सरगर्मी बढ़ रही है. ... राहुल गांधी भी चार बार यहां ...क है कि दांव ऊंचे हैं. बिहार के ...हास में पहली बार भाजपा 243 ...टों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर मैदान में उतर रही है. आरजेडी के पास 77 सीटें हैं, तो जेडी(यू) 45 विधायकों के साथ तीसरे पायदान पर है.

बिहार हिंदी पट्टी का अकेला राज्य है जहां भाजपा ने कभी अपने दम पर सरकार नहीं बनाई. और भगवा रणनीतिकार जानते हैं कि वे इतिहास के इस हिस्से को नए सिरे से लिखने के कगार पर खड़े हैं. 2020 की उसकी 19.46 फीसद वोट हिस्सेदारी अपने आप में तो अच्छी-खासी है ही, यह उसकी एक ज्यादा गहरी लोकप्रियता को छिपा लेती है, और वह यह कि उसने जिन 110 सीटों पर चुनाव लड़ा, वहां उसकी वोट हिस्सेदारी 42.56 फीसद थी. इसी की बदौलत उसे जद (यू) को अपनी लड़ी 115 सीटों पर मिले 32.83 फीसद वोटों पर खासी बढ़त हासिल है. यही बात मुख्यमंत्री की कुर्सी के बड़े इनाम पर भाजपा के अघोषित दावे को जायज बना देती है.

एक और हकीकत को हिसाब में लें तो उसका दावा और वजनदार हो जाता है. 2015 उस सिलसिले में एकमात्र अपवाद था जिसमें भाजपा और जद (यू) ने हमेशा गठबंधन में चुनाव लड़ा. हर बार अपनी लड़ी सीटों पर उनकी वोट हिस्सेदारी के प्रतिशत तकरीबन एक जैसे थे: फरवरी 2005 में 24.91/26.41; अक्तूबर 2005 में 35.64/37.14; और 2010 में 39.56/38.77. 2020 में 9.73 फीसद अंकों के भारी अंतर से वह संतुलन गड़बड़ा गया. उस वक्त जो भविष्य दूर दिखाई देता था, वह अब पहुंच के भीतर है.

प्लान बी पहले

मंसूबा यह दिखाई देता है कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद मोदी के इर्दगिर्द बने आभामंडल को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाए, और इस तरह नीतीश की अहमियत और वजन में आई साफ कमी की भरपाई की जाए, वहीं उस पुल को भी न टूटने दिया जाए जिसके जरिए उनके ईबीसी, महिला और ओबीसी वोटरों के मूल मतदाता मंडल तक पहुंचा जा सकता है. यह बात भाजपा के एक बड़े नेता ने स्वीकार भी की: उन्हें 'छोड़ने की कोई संभावना नहीं' है, लेकिन चुनाव के बाद नतीजे भगवा खेमे के पक्ष में आने पर उनकी पार्टी मुख्यमंत्री के पद पर दावा कर सकती है.

खास बातें

- **मोदी ने साफ तौर पर नीतीश को एक बार फिर एनडीए का सीएम चेहरा घोषित करने से परहेज किया.**
- **यह उसकी अपने रेज्यूमे में बड़ा अंतर दूर करने की योजना के माकूल है: बिहार में एकछत्र राज**

उस स्थिति में कौन-से चेहरे मुख्यमंत्री पद की दौड़ में हो सकते हैं? उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और केंद्रीय राज्यमंत्री नित्यानंद राय संभावित चेहरे हैं. लोजपा के युवा वारिस चिराग पासवान भी हैं, जो छुपे रुस्तम के बजाए खेल बिगाड़ू दांव ज्यादा हैं. ज्यादा सीटों (जिसमें मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर खुद को पेश करना निहित है) पर उनके जोर देने का इस्तेमाल नीतीश की सीट हिस्सेदारी को 100 के आसपास समेट देने के लिए किया जा रहा है. असल मोड़ चुनाव के बाद आ सकता है, अगर भाजपा और उसके गैर-जद (यू) सहयोगी साधारण बहुमत हासिल कर लें या उसके करीब पहुंच जाएं. ■

कविता मुरलीधरन

कमल हासन ने 2008 में फिल्म *दशावतारम्* में दस भूमिकाएं निभाकर पूरे देश को चौंका दिया था. लेकिन तब कम ही लोगों ने सोचा होगा कि उनकी बहुमुखी प्रतिभा राजनीति का किरदार भी निभा सकती है. यह भी न सोचा होगा कि वे एक दिन संसद के सदन में इस भूमिका में दिखेंगे. उनके अमूमन बेहद विनम्र, संयमित सार्वजनिक व्यवहार के मद्देनजर किसी ने यकीनन यह भी न सोचा होगा कि उनके नए सियासी मंच पर आते ही तीखी बहस और भाषाई विवाद छिड़ जाएगा.

फिर भी राज्यसभा की ड्योढ़ी पर खड़े हासन कुछ कन्नड़ लोगों के निशाने पर हैं. उनकी हाल ही रिलीज हुई फिल्म *ठग लाइफ* पर प्रतिबंध लगाने की मांग उठ खड़ी हो गई है, बाकयदा खंडन-मंडन, आलोचना और अदालती हस्तक्षेप के साथ. यह तुमुल एक हल्की-फुल्की टिप... 'कन्नड़ तमिल से ...

यह बात बेहद ... भाईचारे के लहजे ... थी, लेकिन वह कुछ ... गई कि भोलेपन और अनजान में पैर जैसे किसी बारूदी सुरंग पर जा पड़ा. कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरामैया को भी नहीं सुहाया. यह ऐसी पटकथा थी जो कमल के दिमाग में सूझी ही नहीं. आखिर वे नई दिल्ली में दक्षिण की आवाज जो बनना चाहते हैं.

दक्षिण के पांव उत्तर में

विवाद की धूल बैठने के बाद, चाहे कटुता थोड़े दिन बनी रहे, लेकिन कथानक उसी बड़ी भूमिका की ओर बढ़ेगा. संसद में कमल का प्रवेश अहम मोड़ है, न सिर्फ उनके लिए, बल्कि तमिलनाडु के सरोकार जोरदार ढंग से राष्ट्रीय मंच पर उठाने के मामले में भी. अब तक वे नाटकीयता, तामझाम से दूर रहकर साफगोई के साथ आगे बढ़ते रहे हैं. उनके साथी रजनीकांत भारी तामझाम और तड़क-भड़क के साथ तमिल सिनेमा को राजनीति में

खास बातें

- तमिल सुपरस्टार कमल हासन द्रमुक के जरिए राज्यसभा में जा रहे.
- उनकी अपील राष्ट्रीय स्तर की है. ऐसे में वे तमिलनाडु और दक्षिण की आवाज बन सकते हैं.
- कन्नड़ भाषा की उत्पत्ति पर उनकी भूल भरी टिप्पणी से एक बेजा विवाद खड़ा हो गया है.
- *ठग लाइफ* को धमकियां मिल रहीं पर इससे जाहिर होता है कि उन्होंने फिल्मों को अलविदा नहीं कहा है.

इलस्ट्रेशनः सिद्धांत जुमडे

...दु

हंगामाखेज एंट्री हासन की

उनकी योजना शोरशराबे के साथ प्रवेश करने की नहीं थी लेकिन दिल्ली में दक्षिण—और द्रमुक—की आवाज बन पाने का इस अभिनेता में गहरा माद्दा

उतारने के बेहतर उम्मीदवार दिखाई देते थे. उन्होंने मानो खिलवाड़ किया, लोगों को उकसाया, लेकिन अंत में ठिठक गए. कमल ने कभी ऐसी आवाजें नहीं उठाईं. वे चुप रहे लेकिन आखिरकार निर्णायक कदम बढ़ाया.

जे. जयललिता और एम. करुणानिधि की मृत्यु के कुछ महीनों बाद 2018 में उन्होंने मक्कल नीति मैयम (एमएनएम) नाम की सियासी पार्टी का गठन किया. 2019 के लोकसभा चुनाव में उसे कुछ हासिल नहीं हुआ और 2021 के विधानसभा चुनाव में भी यह पार्टी एक भी सीट नहीं जीत पाई, इसलिए कमल ने अपनी उम्मीदों को समेट लिया. समझदारी से उन्होंने खुद को एडजस्ट किया. 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने द्रमुक के साथ गठबंधन किया, जिसे वे वैचारिक रूप से करीब मानते हैं और जिसने उनकी लोगों में अपील और स्टार प्रचारक की क्षमता को पहचाना. समझ यही बनी थी कि कमल द्रमुक के नेतृत्व वाले गठबंधन के लिए प्रचार करेंगे और बदले में पार्टी उन्हें राज्यसभा भेजेगी.

यह दोनों के लिए व्यावहारिक रास्ता था. अपनी आवाज, साफगोई, कद और वैचारिक झुकाव के साथ कमल द्रमुक के लिए महत्व की राष्ट्रीय उपस्थिति साबित हो सकते हैं. आज के मीडिया के तामझाम वाली राजनीति में उनका महत्व दोहरा है. उनकी ऐसी छवि है जिसकी अपील पूरे देश में है क्योंकि उनके पिछली बॉलीवुड फिल्मों की अपनी अपील है जो नई दिल्ली में किसी और के साथ नहीं. फिर ऐसी कोई भी सफलता द्रमुक को अपने इलाके में भी फायदा पहुंचाएगी, जहां वे अभिनेता से नेता बने विजय की काट पेश कर सकते हैं.

कमल राज्यसभा में प्रवेश के साथ शायद अब तक की सबसे कठिन भूमिका में कदम रख रहे हैं, यह कितनी कठिन है, इसका एहसास उन्हें तमिल-कन्नड़ ज्वाला में उंगलियां जलाकर पहले ही हो गया. वैसे, यह पूरी तरह रास्ता बदलना भी नहीं है. प्रतिष्ठित फिल्म *नायकन* के दशकों बाद *ठग लाइफ* में निर्देशक मणिरत्नम के साथ फिर से जुड़कर कमल ने संकेत दिया है कि उन्होंने सिनेमा नहीं छोड़ा है. लगता है, फिलहाल उनके पांव दोनों नावों पर रहेंगे. दरअसल, *ठग लाइफ* के ऑडियो लॉन्च पर उन्होंने वे शब्द कहे थे, जो कन्नड़ आइकन राजकुमार के बेटे अभिनेता-निर्माता शिव राजकुमार को प्यार से संबोधित था. इसका मतलब पारिवारिक बंधन को दर्शाना था ... बुरी तरह गड़बड़ा ...

उन्होंने ब... साथ माफ... कहा, "मैंने जो कहा वह प्यार में था. मेरा कोई और मतलब नहीं था. नेता भाषा पर बात करने के काबिल नहीं होते. उनके पास इसके बारे में बात करने की सलाहियत नहीं होती. मैं भी वही हूं."

तमिल के महान साहित्यकार पेरुमल मुरुगन ने *इंडिया टुडे* से कहा, "उन्होंने जो कहा वह नया नहीं है. तमिल राष्ट्रवादी हमेशा यही कहते हैं. वे द्रविड़ भाषाओं के निकलने का दावा करने तक ही सीमित नहीं रहते. उनका दावा है कि दुनिया की सभी भाषाएं तमिल से पैदा हुई हैं. इसमें तर्क से ज्यादा भावना बोलती है और इसमें भाषाई कट्टरता है." लेकिन मुरुगन के शब्दों में, "किसी विचार का मुकाबला करने का सही तरीका दूसरा विचार है." हो सकता है कि कमल को कोई नया विचार मिल जाए.■

CamScanner